गु....ड मॉ....र्नि....ग सर !

केवलानंद कांडपाल*

विद्यालय समाज का एक महत्वपूर्ण अवयव है। औपचारिक संस्था के रूप में ज्ञान के सृजन, कौशलों के विकास एवं मूल्यों के बीजारोपण में विद्यालय की अहम् भूमिका है। किसी लोकतांत्रिक देश में प्रारंभिक शिक्षा का प्रमुख उद्देश्य बच्चों में लोकतांत्रिक मूल्यों हेतु उपयुक्त वातावरण का पोषण करना है। इस प्रकार ये विद्यालय लोकतंत्र के उपयुक्त नागरिकों के विकास हेतु लोकतंत्र की नर्सरी की भूमिका का निर्वहन करते हैं। लोकतंत्र के बहुमूल्य मूल्यों यथा – समानता, स्वतंत्रता, व्यक्ति की गरिमा एवं अभिव्यक्ति और विचार की स्वतंत्रता, सहयोग एवं भागीदारी, सामूहिकता, ज़िम्मेदारी लेना आदि महत्वपूर्ण लोकतांत्रिक मूल्य विद्यालयी प्रक्रिया का महत्वपूर्ण हिस्सा होने चाहिए। इसी दृष्टिकोण से विद्यालय अवलोकन के कुछ महत्वपूर्ण बिंदुओं को इस आलेख के माध्यम से साझा करने का प्रयास किया गया है।

विद्यालय में लोकतांत्रिक मूल्यों के बीजारोपण एवं पोषण हेतु क्या-क्या प्रक्रियाएँ अपनायी जा रही हैं। यह जानने-समझने के लिए विद्यालयी प्रक्रिया में छात्रों एवं अध्यापकों के व्यवहार का अवलोकन करना एक उपयुक्त प्रक्रिया हो सकती है। प्रक्रिया के अवलोकन के बाद प्राप्त अंतर्दृष्टि के आलोक में बच्चों एवं अध्यापकों से बातचीत करके किसी निष्कर्ष पर पहुँचना तर्कसंगत होगा। इसी मंतव्य से जनपद के कुछ सरकारी प्राथमिक एवं उच्च प्राथमिक विद्यालयों का अवलोकन करने का निश्चय किया गया। अतः विद्यालय की प्रार्थनासभा से लेकर विद्यालय बंद होने तक की संपूर्ण प्रक्रिया का तटस्थ अवलोकन किया गया तथा अवलोकन के आधार पर कुछ विद्यालयों के बच्चों एवं अध्यापकों से बातचीत की गई।

अतः विद्यालय अवलोकन की प्रक्रिया प्रार्थना सभा की गतिविधियों से प्रारंभ होती है। प्रार्थना स्थल पर सभी बच्चों द्वारा लंबी तान के साथ गुड मॉर्निंग सर कहना पहली बार में बहुत चकित नहीं करता। इसके बाद कक्षा-कक्ष प्रक्रिया के अवलोकन हेतु कक्षा में जाने का क्रम होता है। पुनः बच्चों द्वारा लंबी

* जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, बागेश्वर, उत्तराखंड

तान के साथ गुड मॉर्निंग सर कहना ज़रूर चकित करता है। इसमें भी हाथ जोड़कर खड़े होकर गुड मॉर्निंग सर कहना ज़रूर सोचने को विवश करता है कि यह प्रक्रिया बार-बार क्यों दोहराई जा रही है? जबकि बच्चों से औपचारिक मुलाकात तो पहले हो ही गई है। जब भिन्न-भिन्न कक्षाओं में बार-बार जाने का क्रम बनता है, बार-बार वही गुड मॉर्निंग सर! की पुनरावृत्ति खिन्न करती है। कई बार मैंने पहल करके इस क्रम को तोड़ने का प्रयास किया और बच्चों के गुड मॉर्निंग सर कहने से पहले ही कहना चाहा कि आप कैसे हैं? इसका प्रत्युत्तर प्राप्त होता है गुड मॉर्निंग सर! बहुत बार तो दोपहर बाद भी यह गुड मॉर्निंग सर ही रहता है। गुड आफ़्टरनून सर नहीं होता है। आप कितनी ही बार उस कक्षा में आते-जाते रहें यह क्रम टूटता नहीं। यह अनुभव एकाध विद्यालय के नहीं हैं वरन् कमोवेश विद्यालयों में यह दृश्य नज़र आते हैं। हर बार एक ही तरह से बच्चों द्वारा खड़े होकर हाथ जोड़ते हुए गुड मॉर्निंग सर (मैम) कहना यह सोचने को मजबूर करता है कि हम वास्तव में विद्यालयों में लोकतांत्रिक मूल्यों का बीजारोपण कर रहें हैं या फिर बच्चों को किसी विशेष साँचे में ढाल रहे हैं।

बच्चों का इस विशेष प्रकार से अभिवादन करना विद्यालय में शिष्टाचार के विशेष स्वरूप को अभिव्यक्त करता है और प्रायः विद्यालय के अध्यापक बच्चों के इस शिष्टाचार युक्त व्यवहार से गदगद होते हैं, परंतु मेरी चिंताएँ दूसरी हैं। जब हम कहते हैं, सैद्धांतिक रूप से मानते भी हैं कि स्वतंत्रता, समता एवं समानता, व्यक्ति की गरिमा आदि लोकतंत्र के बहुत ही पवित्र मूल्य हैं और इनका बीजारोपण विद्यालय में होना ही चाहिए, फिर यह किसी विशेष साँचे में ढला व्यवहार क्यों ? इस बारे में कुछेक विद्यालयों में बच्चों से बातचीत कर जानने का प्रयास किया गया। अध्यापकों से भी बातचीत की गई। अध्यापकों का तो स्पष्ट मानना था कि ऐसा करने में कोई बुराई नहीं है बल्कि यह तो अनुशासित एवं शिष्ट बच्चों का अभिव्यक्त व्यवहार है। हाँ, बच्चों से बातचीत में इस व्यवहार को दोहराने के कुछ सूत्र ज़रूर मिले। मसलन एक विद्यालय के बच्चों से बातचीत करके जब विश्वास युक्त वातावरण बन गया तो बच्चों से बातचीत में कुछ तथ्य उभर कर सामने आए। कुछ बच्चों ने दबी ज़ुबान से कह ही दिया कि बार-बार ऐसा करना दरअसल उन्हें भी अच्छा नहीं लगता परंतु जब

> "सार्वजनिक स्थल के रूप में स्कूल में समानता, सामाजिक विविधता और बहुलता के प्रति सम्मान का भाव होना चाहिए। साथ ही बच्चों के अधिकारों और गरिमा के प्रति सजगता का भाव होना चाहिए। इन मूल्यों को सजगता पूर्ण स्कूल के दृष्टिकोण का हिस्सा बनाया जाना चाहिए और उन्हें स्कूली व्यवहार की नींव बनना चाहिए। सीखने की क्षमता देने वाला वातावरण वह होता है, जहाँ बच्चे सुरक्षित महसूस करते हैं, जहाँ भय का कोई स्थान नहीं होता और स्कूली रिश्तों में बराबरी और जगह में समता होती है। बहुधा इसके लिए शिक्षक को कुछ विशेष प्रयास नहीं करना पड़ता सिवाय बराबरी का व्यवहार करने और बच्चों में भेदभाव न करने के।"
>
> *राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा — 2015, पृष्ठ 92*

अध्यापक या कोई निरीक्षणकर्ता अधिकारी कक्षा में आए तो उन्हें करना ही पड़ता है, ऐसा करने को उनसे कहा गया है। बच्चों की कुछ विशेष प्रतिक्रियाएँ भी सामने आईं, मसलन –

- कुछ बच्चों ने कहा, हमें मालूम नहीं बार-बार क्यों करते हैं ? हम तो ऐसे ही करते हैं।
- कुछ बच्चों ने बताया कि उनसे ऐसा करने के लिए कहा गया है, इसलिए करते हैं।
- पूछने पर कि उन्हें इस प्रकार बार-बार दोहराना अच्छा लगता है, कुछ बच्चों ने क्या यह करना बहुत ज़रूरी है ?

कई बार ऐसा भी दिखाई दिया कि गुड मॉर्निंग सर कहने के साथ-साथ कुछ बच्चे उठते नहीं या फिर उठने का उपक्रम भर करते हैं। शिष्टाचार एवं सम्मान के अर्थ को आत्मसात किए बिना बच्चों द्वारा यांत्रिक व्यवहार करना स्वाभाविक भी है।

मूल्य अनुकरण द्वारा एक शिक्षक से बच्चों में हस्तांतरित होते हैं, विद्यालय के बाहर शिक्षक के स्थान पर कोई अन्य वयस्क से बच्चे मूल्य ग्रहण कर रहे होते हैं। हमारे समक्ष निम्न दो विकल्प हैं –

- बच्चों को सम्मान करना सिखाने के लिए दक्ष बनाया जाए, बिना आत्मसात किए क्रियाओं को बार-बार दोहराया जाए जिससे बच्चे यांत्रिक व्यवहार अपना लें।
- शिक्षक बच्चों का सम्मान करें। संभव है कि शिक्षकों द्वारा सम्मानपूर्ण व्यवहार की मॉडलिंग से बच्चे इस व्यवहार को ग्रहण करने लगें, सम्मान अभिव्यक्त करने के बारे में अर्थ निर्मित कर लें जिससे यह उनका स्थायी व्यवहार बन जाए। इस प्रक्रिया के अपनाने से बच्चों के विद्यालयी व्यवहार एवं विद्यालय के बाहर के व्यवहार में फ़र्क भी खत्म हो सकेगा।

सम्मान करना सिखाना तथा इसमें दक्ष करना यांत्रिक प्रक्रिया है। इसके बजाय शिक्षक स्वयं बच्चों, अपने सहकर्मियों का सम्मान करें इससे बच्चों में यह मूल्य स्वतः ही हस्तांतरित होंगे। मूल्य वस्तुतः अनुकरणीय होते हैं।

शिक्षक स्वयं पहल करके कहें गुड मॉर्निंग बच्चों, आप कैसे हैं? क्या चल रहा है? क्या-क्या कर रहे हैं? आदि-आदि। शुरू में संभव है बच्चों को कुछ अटपटा लगे क्योंकि बच्चे इस प्रकार के व्यवहार के आदी नहीं हैं परंतु बाद में सामान्य हो जाएगा और बच्चे इसके आदी हो जाएंगे। इसका सबसे बड़ा फ़ायदा यह होगा कि बच्चों में समानता के मूल्यों का बीजारोपण होने लगेगा, धीरे-धीरे ही सही। वस्तुतः संवेदनशील शिक्षक इस प्रकार का मॉडल व्यवहार करते भी हैं।

बच्चे उसी वातावरण में सीख सकते हैं जहाँ उन्हें लगे कि उन्हें महत्वपूर्ण माना जा रहा है। हम स्कूलों में आज भी सभी बच्चों को ऐसा महसूस नहीं करवा पाते। सीखने का आनंद एवं संतोष के साथ रिश्ता न होने के बजाय भय, अनुशासन व तनाव से संबंध हो तो यह सीखने के लिए अहितकारी होता है।

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा — 2005, पृष्ठ 16

इस पर बातचीत करने पर पता लगा कि सामने वाले की सत्ता जैसी किसी चीज़ का उनको भान है। यह तब और स्पष्ट हुआ जब बच्चों के अभिभावक या गाँव का कोई व्यक्ति विद्यालय में नमूदार हुआ तो बच्चों ने गुड मॉर्निंग सर या गुड मॉर्निंग मैम वाला व्यवहार नहीं दोहराया। इससे एक बात मेरी समझ में आई कि बच्चों की दृष्टि में कुछ लोग विशिष्ट श्रेणी के होते हैं। उनके सम्मान का तरीका अलग होता है, शेष आम आदमी के लिए इसकी कोई ज़रूरत नहीं। जब हम किसी तार्किक आधार के बिना बच्चों से किसी विशिष्ट किस्म के व्यवहार को बार-बार दोहराने को कहेंगे तो बच्चा यांत्रिक ढंग से आवश्यकतानुसार उस व्यवहार को करेगा परंतु ज्यों ही विद्यालय के बाहर आएगा वह अपने मूल व्यवहार को अपनाने लगेगा। इससे बच्चे के विद्यालयी व्यवहार एवं विद्यालय के बाहर के व्यवहार में फ़र्क दिखाई देता है। कई बार ऐसा भी दिखाई दिया कि गुड मॉर्निंग सर कहने के साथ-साथ कुछ बच्चे उठते नहीं या फिर उठने का उपक्रम भर करते हैं। शिष्टाचार एवं सम्मान के अर्थ को आत्मसात किए बिना बच्चों द्वारा यांत्रिक व्यवहार करना स्वाभाविक भी है।

यह आम एवं खास की अवधारणा बच्चे के मन में इस प्रकार से अधिरोपित होती है कि बड़े होने पर भी हम इसे दोहराते रहते हैं। सभा, मीटिंग, सेमिनार में किसी खास व्यक्ति के पधारने पर खड़ा होना, उसके बैठने के बाद बैठना, उसके उठने पर उठना-बैठना यह सब चलता ही रहता है, बहुत बार बहुत अनमने ढंग से भी परंतु आवश्यकतानुसार रूप से हमें यह सामान्य भी लगता है।

यह तो स्पष्ट ही है कि विद्यालय बच्चों को शिष्टाचार/सम्मान अभिव्यक्त करने की मनसा से यह सब बच्चों से करवाते हैं परंतु इससे समता एवं समानता के बहुत उपयोगी मूल्यों की उपेक्षा कर देते हैं । यद्यपि वे जान-बूझकर ऐसा नहीं कर रहे होते हैं परंतु अंततः यही मूल्य बच्चों में पोषित होते रहते हैं। इसके प्रति बहुत सचेत ढंग से संवेदनशील रहने की आवश्यकता है। यांत्रिक रूप से शारीरिक मुद्राओं द्वारा सम्मान अभिव्यक्त होता हो या न होता हो परंतु बच्चों के लिए इसका कोई अर्थ नहीं होता, अत: कोई मूल्य भी पल्लवित नहीं होता। हम बच्चों को एक विशेष ढाँचे में निर्मित करते हैं। जहाँ सत्ता के अनुपात में सम्मान अभिव्यक्त करना हमारा मूल्य बन जाता है। यहाँ पर मुझे यू-ट्यूब पर देखी हुई एक बहुत ही महत्वपूर्ण घटना याद आती है। संयुक्त राज्य अमेरिका के प्रेसीडेंट बराक ओबामा महाशय किसी पुस्तकालय में प्रवेश करते हैं। वहाँ एक बच्चा उनके आगमन से बेखबर अपने काम में जुटा हुआ है। प्रेसीडेंट को आश्चर्य हुआ कि शायद वह बच्चा मुझे पहचान नहीं पाया है। अतः उन्होंने आगे बढ़कर बच्चे को परिचय देना चाहा कि मैं प्रेसीडेंट बराक ओबामा हूँ। बच्चे ने किसी प्रकार की हड़बड़ाहट की प्रतिक्रिया न करके प्रेसीडेंट को अपना परिचय पत्र दिखाने को कहा। उनके पास कोई परिचय पत्र तो नहीं था परंतु लाइसेंस होने की बात कही। बच्चे ने वही देखना चाहा, लाइसेंस को भली भाँति देखकर बच्चे ने ओके कहा और खड़े होकर प्रेसीडेंट से हाथ मिलाया और पुनः अपने काम में लग गया। यह है बराबरी के व्यवहार और समान एवं समानता को प्रदर्शित करता सम्मानपूर्ण व्यवहार।

लोकतांत्रिक समाज में प्रत्येक व्यक्ति, नागरिक की हैसियत से समान है चाहे पद, कार्य दायित्व के रूप में उसकी भूमिका कुछ भी क्यों न हो। यह मूल्य बच्चों में किस प्रकार पोषित किया जाए यह विद्यालय का प्रमुख सरोकार होना चाहिए। बच्चा आत्मविश्वास पूर्वक सामने वाले से नज़र मिलाकर बराबरी का व्यवहार कर सके। यह विद्यालय का मुख्य शैक्षिक मूल्य होना चाहिए। इसके लिए विद्यालयी प्रक्रिया में बच्चों से बराबरी का व्यवहार किया जाए। इसके लिए विद्यालय में चल रहे बहुत सारे मूल्य ढाँचों पर विचार करने की भी आवश्यकता है। मसलन–

1. बच्चों को ऐ लड़के, ऐ लड़की से संबोधित करने के बजाय उनके नाम से संबोधित किया जाना उन्हें अच्छा लगता है। उनका नाम अपनी एक विशिष्ट पहचान एवं अस्तित्व को अभिव्यक्त करता है।
2. कक्षा-कक्ष प्रक्रिया में होशियार बच्चे, औसत बच्चे एवं मूर्ख बच्चों के रूप में विभाजन एवं संबोधन समता एवं समानता के बहुत संवेदनशील मूल्य का हनन करता है। कक्षा में बच्चा तो एक बच्चा है सीखने की एक स्वायत्त इकाई है, उसे बच्चे के रूप में ही व्यवहृत करना चाहिए।
3. विद्यालयी प्रक्रिया में कार्य दायित्वों को लड़के-लड़की के कार्यों में विभक्त कर, बच्चों में जेंडर विभेद का बीजारोपण करता है। बच्चे किसी भी काम को इस दृष्टि से नहीं देखते। उनके लिए सभी काम बराबर हैं। हम ही बच्चों में इस विभेद का बीजारोपण करते हैं।
4. इसी प्रकार बच्चों को किसी क्षेत्र विशेष/बस्ती विशेष के बच्चे के रूप में चिह्नित करना/संबोधित करना बच्चों की अस्मिता पर असर डालता है। विद्यालय के लिए तो प्रत्येक बच्चा एक बच्चा है, चाहे उसकी जाति, रंग, धर्म, निवास स्थान, आय स्तर, सामाजिक स्तर कुछ भी क्यों न हो। यह बच्चे की पहचान का आधार नहीं है। बच्चा इन सभी विभेदों से इतर सीखने के समान अवसर पाने का अधिकारी है। यदि विद्यालय अध्यापक संवेदनशील रहकर प्रत्येक बच्चे के लिए समान अवसर सुनिश्चित कर पाते हैं तो यह बच्चों में समता, समानता एवं गरिमा जैसे महत्वपूर्ण मूल्यों का बीजारोपण एवं पोषण कर रहे होते हैं।
5. अंत में एक और विशेष व्यवहार का उल्लेख करके अपनी बात समाप्त करना चाहूँगा। विद्यालय की अकादमिक एवं पाठ्य सहगामी गतिविधियों में कुछ गिने-चुने बच्चे ही प्रतिभाग करते दिखाई देते हैं। बहुत बार तो कुछ बच्चे जिनको होशियार बच्चे की अधिगामी पहचान विद्यालय द्वारा दी गई है। वही लगभग हर गतिविधि में भाग लेते नज़र आते हैं। अन्य बच्चे की लालसा भरी नज़र सोचने को विवश करती है कि विद्यालय इन्हीं बच्चों के लिए अवसर सृजित करने में कृपणता क्यों बरतते हैं? वस्तुतः प्रत्येक बच्चे को अवसर देने के लिए उसकी क्षमता के अनुरूप गतिविधियाँ सृजित की जा सकती हैं।

6. एक अन्य व्यवहार विद्यालयों में देखने में आता है कि कुछ गिने-चुने बच्चों की प्रधानाध्यापक/अध्यापक कक्ष तक पहुँच थी। बच्चे प्रायः अध्यापकों की दृष्टि में होशियार या स्मार्ट बच्चे होते हैं। किसी विशेष परिवार या वर्ग के बच्चे होते हैं। बच्चों में इनकी पहचान पहुँच वाले के बच्चे के रूप में होती है। बहुत बार पहुँच वाले बच्चे दूसरे बच्चों, जिनकी पहुँच नहीं है, की सिफ़ारिश करते नज़र आते हैं मसलन उसके लिए छुट्टी माँगना आदि-आदि। सिफ़ारिश का यह बहुत छोटा प्रारूप बच्चों में एक ऐसे मूल्य का बीजारोपण करता है कि भविष्य में ऐसे बच्चों के लिए सिफ़ारिश एक ज़रूरत बन जाती है और ऐसे सिफ़ारिशकर्ता सत्ता में बिचौलिए बन जाते हैं। यह लोकतंत्र की दृष्टि से बहुत ही घातक मूल्य है। यह विशेष प्रकार के मूल्य का बीजारोपण करता है। क्यों न प्रत्येक बच्चे की पहुँच अध्यापक/प्रधानाध्यापक तक हो।

विद्यालय लोकतांत्रिक मूल्यों की नर्सरी है तो इस नर्सरी के प्रत्येक पौधे का पोषण होना ही चाहिए। अवसर एवं भागीदारी की समता एवं समानता के मूल्य विद्यालयों में नीति वचन लिख देने मात्र से विकसित नहीं होंगे वरन् इन मूल्यों को विद्यालयी प्रणाली में योगदान देने वाले सभी घटकों (यथा — शिक्षक, प्रशासक, निरीक्षक आदि) को अपने व्यवहार से इन मूल्यों को प्रदर्शित भी करना होगा। मूल्य वस्तुतः अनुकरणीय होते हैं। अनुकरण से इनका बीजारोपण होता है। मुख्य बात है कि ऐसे लोकतांत्रिक मूल्य युक्त व्यवहार बच्चों के आस-पास प्रचुरता से मौजूद होने चाहिए तभी बच्चों में इसका बीजारोपण एवं पोषण होने की उम्मीद की जा सकती है, बल्कि हमारे देश के लिए तो यह उम्मीद करना निहायत ज़रूरी भी है।

संदर्भ

एन.सी.ई.आर.टी. 2007. *मननशील शिक्षक.* नयी दिल्ली.

_____. 2005. *राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा — 2005.* नयी दिल्ली.

ऐटमोटोव, चिंगिज. 1999. *पहला अध्यापक.* अनुवाद — भीष्म साहनी. राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, नयी दिल्ली.

कुरोयानागी. 1996. *तोत्तो-चान-तेत्सुको.* अनुवाद — पूर्वा याज्ञनिक कुशवाहा. नेशनल बुक ट्रस्ट इंडिया, नयी दिल्ली.

ग्रीनबर्ग, डेनियल. 2013. *अब हम आज़ाद हैं- सडबरी वैली स्कूल.* अनुवाद — पूर्वा याज्ञनिक कुशवाहा. दिसंबर. एकलव्य प्रकाशन, भोपाल.

डैनीसन, जॉर्ज. 1997. *बच्चों का जीवन.* अनुवादक — पूर्वा याज्ञनिक कुशवाहा. ग्रंथ शिल्पी (इंडिया) प्रा. लि, नयी दिल्ली.

ड्यूवी, जॉन. 1998. *शिक्षा और लोकतंत्र.* अनुवादक — लाडली मोहन माथुर. ग्रंथ शिल्पी (इंडिया) प्रा. लि., नयी दिल्ली.

धनकर, रोहित (संपादक). 2011. *लोकतंत्र, शिक्षा और विवेकशीलता.* आधार प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड, पंचकुला, हरियाणा.

बधेका, गिजू भाई. 1991. *दिवा स्वपन*. अनुवाद — काशीनाथ त्रिवेदी. नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया, नयी दिल्ली.

भारत सरकार. द राइट ऑफ़ चिल्ड्रन टू फ्री एंड कंपल्सरी एजुकेशन एक्ट — 2009. *भारत का राजपत्र*. विधि और न्याय मंत्रालय.

माइकल, डब्ल्यू. एपल और जेम्स ए. बीन (सम्पादन). 2007. *लोकतांत्रिक विद्यालय*. अनुवाद — स्वयं प्रकाश. जून. एकलव्य प्रकाशन, भोपाल.

मैथ्यूज़, गैरथ वी. 1996. *बच्चों से बातचीत*. अनुवादक — सरला मोहन लाल. ग्रंथ शिल्पी (इंडिया) प्रा. लि., लक्ष्मीनगर, दिल्ली.

वारनर, सिल्विया एश्टन. 1996. *अध्यापक*. अनुवादक — पूर्वा याज्ञनिक कुशवाहा. ग्रंथ शिल्पी (इंडिया) प्रा. लि., नयी दिल्ली।

होल्ट, जॉन. 2007. *शिक्षा की बजाय*. अनुवाद — सुशील जोशी. एकलव्य प्रकाशन, भोपाल.